Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अनुवाद का महत्त्व

प्रा.धनंजय घुटुकडे

भारती वद्यापीठ, मातोश्री बयाबई श्रीपतराव कदम कन्या

महा वद्यालय कडेगांव, जिला- सांगली (महाराष्ट्र)

प्रस्तावना -

बीसवीं शताब्दी में देशों के बीच की दूरियाँ कम होने के परिणामस्वरूप व भन्न वैचारिक धरातलों और आ थक, औद्यो गक स्तरों पर पारस्परिक भा षक वनिमय बढ़ा है और इस वनिमय के साथ-साथ अनुवाद का प्रयोग बेडी मात्रा में कया जाने लगा है। आज के वैज्ञानिक युग में अनुवाद बहुत महत्त्वपूर्ण हो गया है। यदि हमें वश्व के कोनो कोनो में चल रही गति व धयों से चर-परि चत होना हैं तो हमें उनके यहाँ वज्ञान के क्षेत्र में, सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में हुई प्रगति एवं परिवर्तन की जानकारी अपे क्षत हैं तो अनुवाद जैसा उपयोगी दुसरा कोई माध्यम नहीं हैं। वश्व में अनुवाद का क्षेत्र वस्तीर्ण हो रहा हैं।

बीसवीं सदी को अनुवाद का युग कहा गया है। यद्य प अनुवाद सबसे प्राचीन व्यवसाय या व्यवसायों में से एक कहलाता है तथा प उसे जो महत्त्व बीसवीं सदी में प्राप्त हुआ वह उससे पहले उसे नहीं मला ऐसा माना जाता है। वर्तमान यग में अ धकतर राष्ट्रों में यदि एक भाषा प्रधान है तो एक या अ धक भाषाएँ गौण पद पर दिखाई देती हैं। दूसरे शब्दों में, एक ही राजनीतिक-प्रशासनिक इकाई की सीमा के अन्तर्गत भाषायी बहुसंख्यक भी रहते हैं और भाषायी अल्पसंख्यक भी। लोकतन्त्र में सब लोगों का प्रशासन में समान रूप से भाग लेने का अ धकार तभी सार्थक माना जाता है, जब उनके साथ उनकी भाषा के माध्यम से सम्पर्क कया जाए। इससे बहुभा षकता की स्थिति उत्पन्न होती है और उसके संरक्षण की प्र क्रया में अनुवाद कार्य का आश्रय लेना अनिवार्य हो जाता है।

वर्तमान समय में वैश्विक स्तर पर व भन्न राष्ट्रों के बीच राजनीतिक, आ थक, वैज्ञानिक और प्रौद्यो गक तथा साहित्यिक और सांस्कृतिक स्तर पर बढ़ते हुए आदान-प्रदान के कारण अनुवाद कार्य की अनिवार्यता और महत्ता की नई चेतना प्रबल रूप से वक सत होती हुई दिखती है। उत्तर-आधुनिक युग में अनुवाद की महत्ता व उपादेयता को वश्वभर में स्वीकारा जा चुका है। वैदिक युग के 'पुन: कथन' से लेकर आज के 'ट्रांसलेशन' तक आते-आते अनुवाद अपने स्वरूप और अर्थ में बदलाव लाने के साथ-साथ अपने बहुमुखी व बहुआयामी प्रयोजन को सद्ध कर चुका है। प्राचीन काल में 'स्वांत: सुखाय' माना जाने वाला अनुवाद कर्म आज संगठित व्यवसाय का मुख्य आधार बन गया है।आज वश्वभर में अनुवाद की आवश्यकता जीवन के हर क्षेत्र में कसी-न-कसी रूप में

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अवश्य महसूस की जा रही है और इस तरह अनुवाद आज के जीवन की अनिवार्य आवश्यकता बन गया है।"बीसवीं शताब्दी के समापन और इक्कीसवीं सदी के स्वागत के बीच आज जीवन का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जहाँ पर हम चन्तन और व्यवहार के स्तर पर अनुवाद के आग्रही न हों। अनुवाद की उपयो गता और आवश्यकता के कारण इसका महत्त्व दिन ब दिन वस्तृत होता जा रहा हैं।"1

वश्व की सभ्यताओं और संस्कृतियों के वकास में अनुवाद की वशेष भू मका रही है।यूनान मश्र चीन आदि की प्राचीन सभ्यताओं से भारत का घनिष्ठ संबंध रहा है और इस संबंध में अनुवाद की वशेष महत्ता रही है। बौद्ध धर्म का प्रचार प्रसार समूचे ए शया में अनुवाद की जीवंत परंपरा का परिणाम है। " वश्व भर में गीता तथा उपनिषद के ज्ञान का अनुवाद अपने ढंग से कया जाता रहा है। पंचतंत्र के लघु संग्रहों का अनुवाद अरबी तथा अन्य यूरोपीय भाषाओं में हुआ है।"2 वास्तव में अनुवाद एक सांस्कृतिक सेतु का काम करता है। वश्व की व भन्न संस्कृतियों को जानने व समझने में इसकी निश्चित रूप से भू मका सद्ध हो। वश्व की सांस्कृतिक एकता में इसका महत्वपूर्ण योगदान है। "आज की भारतीय संस्कृति जिसे हम सामा सक संस्कृति कहते हैं उसके निर्माण में हजारों वर्षों के व भन्न धर्मों, मतों एवं वश्वासों की साधना छिपी हुई है। इन सभी मतों एवं वश्वासों को आत्मसात कर जिस भारतीय संस्कृति का निर्माण हुआ है उसके पीछे अनुवाद की महत्त्वपूर्ण भू मका असंदिग्ध है।"3 अनुवाद एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा व भन्न राष्ट्रों की सांस्कृतिक नि धयां आज हमारे सामने हैं। अनुवाद के माध्यम से ही हम एक दूसरे की सांस्कृतिक वरासत के भागीदार बनें हैं।

साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। अनुवाद ने ना केवल व भन्न साहित्य के वकास में महत्वपूर्ण भू मका निभाई है बल्कि भाषा के वकास में भी इसके योगदान को नकारा नहीं जा सकता। वश्व के व भन्न साहित्य के बीच जो परस्पर आदान-प्रदान हुआ वह अ धकांशतः अनुवाद के माध्यम से ही हुआ है।इसके माध्यम से अन्य भाषाओं के साहित्य का अध्ययन करने से जिन नहीं अभी व्यक्तियों संवेदनाएं वचारधाराओं जीवना अनुभूतियों और साहित्य शै लयों का परिचय मलता है वह हमारे जीवन के साथ-साथ हमारी चंतन शक्ति और साहित्य सृजना को भी प्रभा वत करती हैं। व भन्न भाषाओं के साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन में भी अनुवाद से काफी सहायता मली है। ज्ञान वज्ञान के क्षेत्र में साहित्य के अध्ययन में अनुवाद का महत्त्व आज व्यापक हो गया है। साहित्य यदि जीवन और समाज के यथार्थ को प्रस्तुत करता है तो व भन्न भाषाओं के साहित्य के सामूहिक अध्ययन से कसी भी समाज, देश या वश्व की चन्तन-धारा एवं संस्कृति की जानकारी मलती है। दुनिया के व भन्न भाषाओं में लखे गए साहित्य में ज्ञान का वपुल भण्डार छिपा हुआ है। इस अनमोल साहित्यिक संपदा को अनुवाद के माध्यम से वश्व मानव तक पहुंचाकर उनकी ज्ञानतृष्णा को तृप्त कया हैं। दुनिया के व भन्न भाषाओं के अनुवाद द्वारा ही तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में सहायता मलती है। तुलनात्मक साहित्य द्वारा इस बात

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

का पता लगाया जाता है क देश, काल और समय की भन्नता के बावजूद व भन्न भाषाओं के रचनाकारों के साहित्य में साम्य और वैषम्य क्यों है ? अनुवाद के द्वारा ही जो तुलनीय है वह तुलनात्मक अध्ययन का वषय बनता है।" प्रेमचन्द और गोर्की, निराला और इ लयट तथा राजकमल चौधरी एवं मोपासाँ के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन अनुवाद के फलस्वरूप ही सम्भव हो सका। "4

वश्व स्तर पर सर्वा धक महत्वपूर्ण योगदान ज्ञान वज्ञान के व भन्न क्षेत्रों का रहा है।अनुवाद से मलने वाले ज्ञान ने मनुष्य के समाजशास्त्र को एक देश की सीमा से निकाल कर दूसरे देश तक पहुंचाया है। संस्कृत और यूनानी साहित्य कला और दर्शन के प्रचार-प्रसार का श्रेय अनुवाद को ही जाता है।आधुनिक नवजागरण काल में पश्चिम के नए ज्ञान वज्ञान से हमारे ज्ञान और चेतना के वकास में अनुवाद ही सबसे बड़ा सहारा बना है। वश्व के सभी वक सत देशों की राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आ थक, वैज्ञानिक तथा प्रौद्यो गकीपरक वकास में अनुवाद की उल्लेखनीय भू मका रही है। आज वज्ञान के तेजी से बदलते हुए वश्व में प्रौद्यो गकी च कत्सा कृ ष आदि के क्षेत्र में हो रहे नए नए अ वष्कारों और अनुसंधान हमसे जुड़े रहने के लए अनुवाद सबसे बड़ा साधन है।

वर्तमान युग में अनुवाद ज्ञान की ऐसी शाखा के रूप में वक सत हुआ है जहाँ इज्जत, शोहरत एवं पैसा तीनों हैं। आज अनुवादक दूसरे दर्जे का साहित्यकार नहीं बल्कि उसकी अपनी मौ लक पहचान है। वज्ञान और प्रौद्यो गकी के क्षेत्र में तेजी से हुए वकास के साथ भारतीय परिदृश्य में कृ ष, उद्योग, च कत्सा, अ भयान्त्रिकी और व्यापार के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ है। इन क्षेत्रों में प्रयुक्त तकनीकी शब्दावली का भारतीयकरण कर इन्हें लोकोन्मुख करने में अनुवाद की महत्त्वपूर्ण भू मका है। बीसवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध रोजगार के क्षेत्र में अनुवाद को महत्त्वपूर्ण पद पर आसीन करता है। सं वधान में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिए जाने के पश्चात् केन्द्र सरकार के कार्यालयों, सार्वजनिक उपक्रमों, संस्थानों और प्रतिष्ठानों में राजभाषा प्रभाग की स्थापना हुई जहाँ अनुवाद कार्य में प्र श क्षत हिन्दी अनुवादक एवं हिन्दी अ धकारी कार्य करते हैं। आज रोजगार के क्षेत्र में अनुवाद सबसे आगे है। प्रति सप्ताह अनुवाद से सम्बन्धित जितने पद यहाँ वज्ञा पत होते हैं अन्य कसी भी क्षेत्र में नहीं।

प्राचीन काल से ही अनुवाद देश- वदेश में वा णज्य और व्यापार के क्षेत्र में अत्यंत उपयोगी रहा है। प्राचीन काल से ही भारत और चीन और यूरोप में व्यापारी लोग अपने व्यापार के लए देश- वदेश जाया करते थे और अनुवाद के सहारे ही व्यापार और वा णज्य करते थे।वर्तमान समय में भी व्यापारी अपने उत्पादों और वस्तुओं की गुणवत्ता और उनके उत्तर वक्रय के संवर्धन के लए अनुवाद का ही सहारा लेते हैं। वश्व स्तर पर बहुराष्ट्रीय कंपनियों की पैठ अनुवाद के सहारे ही जम पाई है।इसके अतिरिक्त अंतरराष्ट्रीय बाजार में उत्पादों और माल को खपाने की प्रतिस्पर्धा में तथा आगे बढ़ने के लए भी अनुवाद का महत्व बढ़ जाता है। वज्ञापन और पर्यटन के क्षेत्र में अनुवाद की बढ़ती भू मका व्यापारिक वकास में अनुवाद के महत्त्व का सबसे बड़ा उदाहरण है। "प्रत्येक देश के प्रमुख नगरो मे

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

आंतरराष्ट्रीय पर्यटन करनेवाली एजन्सीयां होती है जिनमें अनुवादक या दुभा षए होते है, इनको स्थानीय भूगोल, संस्कृती, सभ्यता एवं इतिहास की अच्छी जानकारी रखनी पडती है इस दृष्टी से इस क्षेत्र मे भी अनुवाद की भू मका उपयोगी रही है।"5

भारत जैसे बहुभाषा-भाषी राष्ट्र की एकता के प्रसंग में अनुवाद की आवश्यकता असंदिग्ध है। भारत की भौगो लक सीमाएँ न केवल कश्मीर से कन्याकुमारी तक बिखरी हुई हैं बल्कि इस वशाल भूखण्ड में व भन्न सम्प्रदायों के लोग रहते हैं जिनकी कंपनी भाषाएँ एवं बो लयाँ एक दूसरे से भन्न हैं। भारत की अनेकता में एकता इन्हीं अर्थों में है क व भन्न भाषाओं, व भन्न जातियों, व भन्न सम्प्रदायों एवं व भन्न वश्वासों के देश में भावात्मक एवं राष्ट्रीय एकता कहीं भी बा धत नहीं होती। हमारे देश में व भन्न जातीयों,धर्मों की अपनी-अपनी मान्यताएं और रीतिरिवाज हैं जिनमें एकता, सहिष्णुता की भावना को प्रबल बनाने में अनुवाद की अहम भू मका रही हैं।

आज सर्वा धक च र्चत क्षेत्र मी डया का हैं। कोई भी समाचारपत्र, रे डया व टीवी चैनल ऐसा नहीं है, जिसमें हमें अनुवाद की जरुरत महसूस न होती है। सनेमा भी अनुवाद का सहारा लेकर बुलंदियों को छू रहा है। टाइटेनिक फल्म इसका बहुत बड़ा उदाहरण है। अनुवाद को बढ़ावा देने के लए सरकार ने नेशनल ट्रासलेशन मशन का गठन कया है।मी डया के सभी क्षेत्रों में चाहे वह हिंदी/अंग्रेजी/भारतीय भाषा के समाचार हों चा चैनल हों, सभी जगह अनुवाद अहम भू मका निभाता है। अंग्रेजी अखबारों के संवाददाताओं को भी समाचार-संकलन के दौरान, साक्षात्कार करते या भाषण की रिपोर्ट करते हुए, दुर्घटना स्थल में जाकर स्टोरी बनाते हुए कई बार अनुवाद का सहारा लेना पड़ता है। संवाददाताओं से लेकर संपादक तक सभी को कसी न कसी स्तर में अनुवाद करना ही पड़ता है। सफल पत्रकर बनने के लए पत्रकारिता के साथ अनुवाद में दक्ष होना आवश्यक है। फल्मों की कई भाषाओं में डबिंग अनुवाद के द्वारा ही होती है। गरज यह क मी डया का काम अनुवाद के बिना नहीं चह सकता। मी डया की तरह अनुवाद भी सर्वव्यापी है और दोनों में गहरा अंत-संबंध है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है क अनुवाद वश्व-संस्कृति, वश्व-बंधुत्व, एकता और समरसता स्था पत करने का एक ऐसा सेतु है जिसके माध्यम से वश्व ज्ञान- वज्ञान के क्षेत्र में क्षेत्रीयतावाद के संकु चत एवं सी मत दायरे से बाहर निकल कर मानवीय एवं भावात्मक एकता के केन्द्र बिन्दु तक पहुँच सकता है और यही अनुवाद की आवश्यकता और उपयो गता का सशस्त एवं प्रत्यक्ष प्रमाण है।बीसवीं शताब्दी में देशों के बीच की दूरियाँ कम होने के परिणामस्वरूप व भन्न वैचारिक धरातलों और आ र्थक, औद्यो गक स्तरों पर पारस्परिक भा षक वनिमय बढ़ा है और इस वनिमय के साथ-साथ अनुवाद का प्रयोग और अ धक कया जाने लगा है। आज के वैज्ञानिक युग में अनुवाद बहुत महत्त्वपूर्ण हो गया है। यदि हमें दूसरे देशों के साथ कंधे से कंधा मलाकर चलना है तो हमें उनके

यहाँ वज्ञान के क्षेत्र में, सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में हुई प्रगति की जानकारी होनी चाहिए और यह जानकारी हमें अनुवाद के माध्यम से मलती है।संचार माध्यमों में गतिशीलता बढ़ाने का कार्य अनुवाद द्वारा ही सम्भव हो सका है तथा गाँव से लेकर महानगरों तक जो भी अद्यतन सूचनाएँ हैं वे अनुवाद के माध्यम से एक साथ सबों तक पहुँच रही हैं। कहने की आवश्यकता नहीं क अनुवाद ने आज पूरे वश्व को एक सूत्र में परो दिया है।

संदर्भ ग्रंथ:

1) व्यावहारिक अनुवाद, एन. ई. वश्वनाथ अय्यर,प्रभात प्रकाशन, प्रभात प्रकाशन 2009,पृष्ठ 76

2) अनुवाद सद्धांत और प्रयोग, जी.गोपीनाथन,लोकभरती प्रकशन इलाहाबाद, प्रथम प्रकाशन 1989,पृष्ठ 36

3) वही, पृष्ठ 55

4) अनुवाद क्या हैं ?(संपा) डॉ.भ. ह.राजूरकर, डॉ. राजमल बोरा,वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, व्दितीय संस्करण 1996,पृष्ठ 148

5) प्रयोजनमूलक हिंदी: अधुनाथन आयाम डॉ.अंबादास देशमुख, शैलजा प्रकाशन, कानपुर व्दितीय संस्करण 2006,पृष्ठ 483